फॉण्ट अलग-अलग हैं (टाइम्स न्यू रोमन, एरियल) लेकिन उन सबका की-बोर्ड एक ही है। अंग्रेज़ी में आई.बी.एम को छोड़कर सभी कम्प्यूटरों में ए.एस.सी आई आई मानक का निर्धारण किया गया है जिसका अर्थ यह है कि आप फॉण्ट कोई भी इस्तेमाल करो की-बोर्ड एक ही रहेगा। हिन्दी मे की-बोर्ड बनाते समय मानक निर्धारित नहीं किया गया इसलिए कृतिदेव फॉण्ट में अंग्रेजी के की-बोर्ड का 'डी' दबाने से 'क' आएगा और शुषा फॉण्ट चुनने पर 'द' आएगा। यह तकनीकी समस्या है, लेकिन इससे इंटरनेट पर ही नहीं, पूरे कम्प्यूटर परिदृश्य पर हिन्दी का भविष्य निर्भर करता है। यह समस्या तभी सुलझेगी जब सरकार की ओर से एक मानक की-बोर्ड तैयार किया जाए और सख्त नियम कानून बनाए जाएँ।

3. यू.आर.एल (Uniform Resource Locator) ऐड्रेस और अन्य तकनीकी जानकारियाँ हिन्दी में न होना।

4. हिन्दी इंटरनेट पर 'इच्छित जानकारी खोजने' के लिए 'सर्च इंजन' का इस्तेमाल किया जाता है। हिन्दी के सामने चुनौती यह है कि उसके पास केवल विकिपीडिया ही उपलब्ध है। सभी जानकारियाँ अंग्रेजी में होती है इसलिए हिन्दी पट्टी को सूचना क्रांति का पूरा लाभ नहीं मिल पाता।

5. एक और समस्या है हिन्दी की स्तरीय वेबसाइटों का अभाव। कहीं वेबसाइटें पिछड़ी हुई हैं, कहीं सर्च इंजन की कमी, कहीं स्तरीयता की कमी कहीं कुछ विशिष्ट लोगों तक सीमित वेबसाइटें तो कहीं सरकारी वेबसाइटें हिन्दी में होने के बावजूद अंग्रेज़ी में जानकारियाँ उपलब्ध करवाती। इंटरनेट पर, ऐसी कई वेबसाइटें है जिनका ई-पाठक लाभ उठा सकता है बस जानकारी की आवश्यकता है। इंटरनेट पर अपनी स्थायी उपस्थिति के लिए हिन्दी को तकनीक सचेत होना होगा।

Scanned by TapScanner